शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (247-250), Jan-March 2019

औपनिवेशिक भारत वर्ष में उत्तर–पूर्वी प्रांत में लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना (1920–1921)

ऐश्वर्य कीर्ति लक्ष्मी
एम0ए0, एम0एड0, शोध छात्रा
पाश्चात्य इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ईमेल - *aishwarya15587@gmail.com*

सारांश

उत्तर–पूर्वी प्रांत में लखनऊ विश्वविद्यालय का गठन एक बिल्कुल नये रूप में 1921 में हुआ था, जो कि पुराने विश्वविद्यालय से अलग था। लखनऊ विश्वविद्यालय आवासीय शिक्षण विश्वविद्यालय के रूप में बनाया गया। इस विश्वविद्यालय के इससे सम्बद्ध कालेजेज जैसे–किंग जार्ज मेडिकल कालेज, क्रिश्चियन कालेज, महिला विभाग के रूप ईसाबेला थोबर्न कालेज, एक शिक्षण इकाई के रूप में कार्यरत थे। इसकी शिक्षा एवं परीक्षा व्यवस्था अत्यन्त आधुनिक इग्लैण्ड की आदर्श विश्वविद्यालय की भांति था। विश्वविद्यालय के शिक्षण एवं प्रषानिक कार्य पूर्ण रूप से समन्वित एवं अलग–अलग थे।

प्रस्तावना

20वीं शताब्दी के दो दशक पहले शिक्षा के क्षेत्र में जागरण एवं सुधार के लिए लॉर्ड कर्जन का उल्लेखनीय एवं सराहनीय योगदान है। उस समय प्रांतीय सरकारें विभिन्न गर्वनरों द्वारा शासित होती थी। जिन्हें एक लक्ष्य की तरफ प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन की आवश्यकता थी। शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षा की ओर प्रान्तीय सरकारों ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था,क्योंकि यह कार्य ब्रिटिश सरकार के होम डिपार्टमेन्ट के आधीन था, इसलिए इसमें सुधार के लिए केन्द्र व्यवस्था एवं निर्देश की गर्वनर जनरल की ओर से विशेष आवश्यकता थी, क्योंकि केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों द्वारा भविष्य की पीढ़ियों की शिक्षा व्यवस्था सुचारू रूप से सुधारने की महत्वपूर्ण आवश्यकता थी। इसलिए यूनिवर्सिटी कमीशन की नियुक्त की गयी, जिसकी सिफारसें लॉर्ड कर्जन के समय में 1904 विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया। उच्च शिक्षा परास्नातक स्तर की परीक्षाओं के अध्ययन एवं अध्यापन की व्यवस्था अपने स्तर पर करें। जबकि 1904 के अधिनियम में विश्वविद्यालय के सीनेट, सिंडीकेट तथा व्यवसायिक क्रियाकलापों का कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नही लाया गया था। वाइस चान्सलर की नियुक्त सरकार द्वारा की जाती है और सरकार द्वारा इससे सम्बद्ध कालेजेज की सम्बद्धता और असम्बद्धीकरण की षक्तियां सरकार में निहित थी तथा सरकार के द्वारा ही प्रोफेसर, रीडर और लेक्चरार की व्यवस्था एवं नियुक्तियां की जाती थी। सन् 1910 में ब्रिटिश सरकार के होम डिपार्टमेन्ट से शिक्षा विभाग को

हटाकर अलग विभाग के अन्तर्गत कर दिया गया। 1913 में सर हरकोर्ट बटलर की नियुक्ति गवर्नर जनरल की काउन्सिल में एजूकेशन मेम्बर के रूप में उनकी नियुक्ति से देश की शिक्षा सम्बन्धी क्रियाकलापों में एक महान युग की शुरूआत हुई। उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में प्रसार एवं अन्य सम्बन्धित गतिविधियां जिसमें कि शैक्षिक प्रगति की नीतियां प्रस्तावित की गई।

कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग और उच्च शिक्षा व्यवस्था

20वीं शताब्दी के 1917–1920 में कलकत्ता यूनिवर्सिटी कमीशन ने कार्य प्रारम्भ किया और भारत वर्ष में शिक्षा के क्षेत्र में एक अनुकरणीय एवं महान कार्य किया। जो कि अनुकरणीय नींव का पत्थर विश्वविद्यालय के लिए साबित हुआ, जिसका विशेष उदाहरण–''ढाका विश्वविद्यालय और लखनऊ विश्वविद्यालय'' है। यह कमीशन मूल रूप से इसलिए नियुक्त किया गया था, कि ''विश्वविद्यालय के क्रियाकलापों में गुण एवं दोश का अध्ययन किया जा सके, क्योंकि कलकत्ता विश्वविद्यालय भारत का सबसे पुराना विश्वविद्यालय था। इसलिए उस समय की मौजूदा देश में विभिन्न विश्वविद्यालयों कार्यकलापों के पैमाने पर रख कर उसका आकलन करके पुर्नगठन के लिए रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।'' अतः स्पष्ट है कि कलकत्ता विश्वविद्यालय एक सुधरी हुए व्यवस्था को विश्वविद्यालय के संदर्भ में हो उसको सामने ला सके। कलकत्ता विश्वविद्यालय इस कमीशन के अध्ययन का पूर्णतः परिणाम ढाका विश्वविद्यालय के रूप में आयोग का परिणाम स्वरूप परिश्रम के रूप में सामने आया तथा इस कमीशन की सिफारिसें देश के अन्य भागों जैसे उत्तर–पूर्वी प्रान्त (विशेष कर अवध) क्षेत्र में प्रभाव से एक आदर्श वातावरण उत्पन्न हुआ।

अवध के तालुकेदार और लखनऊ विश्वविद्यालय का प्रस्ताव

अवध के तालुकेदारों की हार्दिक इच्छा थी कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अलग लखनऊ में उनका स्वयं के एक विश्वविद्यालय की व्यवस्था हो तथा उन्होने हरकोर्ट बटलर की इस विचार का स्वागत किया कि लखनऊ में एक साल के अन्दर विश्वविद्यालय की स्थापना हो जाये और इस कार्य को पूर्ण करने के लिए 30 लाख रूपये की व्यवस्था की तथा पिछली षदी के छठे दशक में तालुकेदारों द्वारा लार्ड कैनिंग के सम्मान में जो कि उस समय 1857 के बाद गवर्नर जनरल और प्रथम वाइसराय के रूप में कार्यरत थे। उनके द्वारा लखनऊ में पाश्चात्य शिक्षा के लिए एक विशेष कालेज की स्थापना की गयी, जो कि एक सनद के द्वारा उनके नाम से ''कैनिंग कालेज'' के रूप में सामने आया तथा उस सनद में यह निर्णय था, कि ''अवध के तालुकेदारों द्वारा जो कर प्राप्त किये जाते हैं, उनका आधा प्रतिशत कैनिंग कालेज को प्रदान किया जायेगा।'' यह दान पत्र एक मजबूत व्यवस्था के रूप में जिसको बाद में ''कैनिंग कालेज कान्ट्रीब्यूशन एक्ट 1920'' के रूप में सामने लाया गया। कैनिंग कालेज के साथ एक और संस्था जो कि किंग जार्ज मेडिकल कालेज के रूप में सरकार द्वारा संचालित था। एक नीव विश्वविद्यालय स्थापना के रूप में सामने था इसके अलावा कालिजिएट एजूकेशन के लिए लखनऊ में कालेज क्रियाशील थे। जिसमें की डिग्री स्तर की पढ़ाई की उच्च स्तरीय व्यवस्थाएं थी, जिसमें कि ''अमेरिकन मिशनरीज, गोलागंज, लखनऊ में संचालित लखनऊ क्रिश्चियन कालेज तथा ईसाबेला थोबर्न कालेज'' जो सभी स्त्री शिक्षा का उत्तर–पूर्वी प्रान्त में प्रथम

महाविद्यालय स्थापित किया गया था। जो विश्वविद्यालय स्त्री शिक्षा के विभाग के रूप में सामने था। इस प्रकार पुरूष शिक्षा के लिए ''क्रिश्चियन कालेज'' न्यूयार्क के ''मेथाडिस्ट ईवान जेलिकल'' चर्च नामक विदेषी अमेरिकन द्वारा संचालित था।

मौजूदा कालेजेस एवं उनका सम्बद्धीकरण

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रदुर्भाव के आने से पहले यह विश्वविद्यालय गैर सरकारी किसी सामुदायिक हित के तथा एक विचारधारा से अन्तर्गत शिक्षा व्यवस्था में नही थे और एक दूर दराज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे, तथा यहाँ के जीवन के उद्देश्य एवं आदर्शों से इनका बहुत कम सरोकार था। ''कैनिंग कालेज''और ''ईसाबेला थोबर्न कालेज'' प्रारम्भ से 600 मील दूर कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे इनका सम्बन्ध था, कि ''पाठ्यक्रमों और अध्ययन व्यवस्था के मानक एवं परीक्षाएं कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित मानकों के अन्तर्गत कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षा ली जाएं।'' अतः सन 1904 के यूनिवर्सिटी एक्ट के प्रभाव में आ जाने के बाद यह संस्थाएं कलकत्ता विश्वविद्यालय से असम्बद्ध हो गयी तथा निकट की इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एवं आश्रित हो गयी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय को अधिक गणतंत्रीय चरित्र प्राप्त था, जबकि विश्वविद्यालय कालेज के जीवन पर सीधे अध्ययन एवं उसके अभ्यास पर कोई विशेष प्रभाव नही रखता था। कालेजेस में पढ़ाने वाले अध्यापकों को यूनिवर्सिटी सीनेट व विश्वविद्यालय की कार्यदायी समितियों में स्थान प्राप्त थे तथा उनके विचारों एवं निर्णयों में शक्तिशाली स्थिति थी, लेकिन विश्वविद्यालय की सीनेट मेम्बरशिप में किसी विशेष महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व अवश्य हो। ऐसी संवैधानिक अनिवार्यता नही थी, न ही सभी महाविद्यालय प्रतिनिधित्व करते थे। लखनऊ विश्वविद्यालय के स्थापित हो जाने के बाद ''कैनिंग कालेज, किंक जार्ज मेडिकल कालेज, ईसाबेला थोबर्न कालेज'' अध्यन–अध्यापन के केन्द्र व्यवस्था हो गये एवं लखनऊ विश्वविद्यालय का जीवंत अंग बन गये। सभी अध्यपक कुछ कनिष्ट लेक्चरार्स (व्याख्याता) को छोड़कर विश्वविद्यालय के ''एकेडमिक काउन्सिल एक्सऑफिसियो (पदेन)'' के सदस्य हो गये।

उपसंहार

लखनऊ विश्वविद्यालय 1920 में वाइसराय की स्वीकृति के अनुरूप अस्तित्व में आ गया। यह प्रारम्भिक अवस्था में ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पहचान में आ गया तथा इसके लिए उच्चतम शिक्षा एवं प्रशासन के स्तर पर व्यवस्था हेतु इसने अपना कार्य प्रारम्भ किया। लखनऊ यूनीवर्सिटी बिल के रूप में सेक्सन–48 के अनुरूप इसने अपना प्रथम वाइसचांसलर श्री ज्ञानेन्द्रनाथ चक्रवर्ती की नियुक्ति प्राप्त की। इस विश्वविद्यालय में आरम्भिक दिनों से ही भारतीय इतिहास का विभाग पृथक रूप से विशिष्ट विद्वानों के अधीन खोला गया। लखनऊ विश्वविद्यालय 1921 से अब तक अपने परिसर में अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य उच्चतम शिक्षा के लिए समर्पित है।

संदर्भ ग्रंथ्ज्ञ

प्राथमिक स्रोतः–

" The Lucknow University Law, 1920"
Simla Record-2, Government of India, General-A
Proceedings, March, 1921, NOS-1-15

"Scheme for the establishment of university teaching and residential university at Lucknow."
Delhi Records 1. 1920 Government of India Education-A Proceedings, July 1920, NOS. 57-64.

1 Tickoo, Champa, *"Indian Universities"* (A Historical Comparative, Prospective), Orient Longman Ltd. New Delhi, 1980.

2 Puri, B.N., *"History of Lucknow University",* 1921-1951 Volume-IPublish by Vice-Chancellor, Lucknow University, Lucknow.

3 नायक, जे0पी0, नूरूल्ला, सैय्यद, *''भारतीय शिक्षा का इतिहास,''* मैकमिलन लिमिटेड, दिल्ली, 1976

4 सिंघल, डॉ0 महेशचंद्र, *''भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएं''*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी, जयपुर, 1971

5 शर्मा, डॉ0 एस0आर0, *''अंग्रेजी शिक्षा इतिहास एवं समस्याएं'',* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2006

6 चोपड़ा, पी0एन0 पुरी, बी0एन0, दास एम0एन0, *' 'भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास''*, मैकमिलन, मद्रास, 1990